आज़ादी का
अमृत महोत्सव
श्री
काशी
विश्वनाथ
धाम
दिव्य काशी-भव्य काशी

श्री काशी विश्वनाथ धाम

का

गौरवशाली इतिहास

एवं

वर्तमान भव्य स्वरूप

सत्यमेव जयते
प्रधानमंत्री
PRIME MINISTER

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि श्री काशी विश्वनाथ धाम के लोकार्पण के अवसर पर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उत्तर प्रदेश के द्वारा 'श्री काशी विश्वनाथ धाम' पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी, अपने कण-कण में पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक ज्ञान की अमृत धारा लिए हुए है। सदियों की आस्था एवं विश्वास का प्रतीक है पवित्र काशी। अध्यात्म और सामाजिक सरोकारों को सहेजने वाली इस पावन भूमि में पूरे देश की झलक मिलती है।

ऐतिहासिक धरोहरों की मौलिकता को सहेजते हुए विकास की ओर अग्रसर होना हमारा ध्येय रहा है। केंद्र और राज्य सरकार के सम्मिलित प्रयासों से काशी को एक ऐसी अत्याधुनिक नगरी के रूप में विकसित किया जा रहा है जिसकी आत्मा पुरातन, परन्तु काया नवीनतम हो। इसी क्रम में श्री काशी विश्वनाथ धाम को आस्था एवं अध्यात्म के उत्कृष्ट केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।
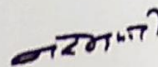
विस्तार एवं सौंदर्यीकरण के बाद प्राचीन समय की तरह ही श्री काशी विश्वनाथ धाम से सीधे मां गंगा के दर्शन हो सकेंगे। श्री काशी विश्वनाथ धाम मंदिर कॉरिडोर के निर्माण से क्षेत्र की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों में तेजी तो आएगी ही, साथ ही पर्यटन, सेवा, लघु उद्योगों एवं रोजगार को बढ़ावा मिलने से काशी का समग्र विकास सुनिश्चित हो सकेगा।

काशी विश्वनाथ धाम के कायाकल्प की इस महत्वाकांक्षी परियोजना को बाबा भोलेनाथ के आशीर्वाद और काशीवासियों के सहयोग एवं समर्थन के बिना पूरा कर पाना संभव नहीं था। काशी की जनता को उनके स्नेह एवं विश्वास के लिए मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

आशा करता हूं काशी विश्वनाथ धाम के गौरव को समेटे इस संग्रहणीय पुस्तक को पाठकों का विशेष स्नेह मिलेगा।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
अग्रहायण 18, शक संवत् 1943
09 दिसंबर, 2021

योगी आदित्यनाथ

लोक भवन, सचिवालय
लखनऊ, उ0प्र0

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिनांक 13 दिसम्बर, 2021 को श्री काशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण किए जाने के अवसर पर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा 'श्री काशी विश्वनाथ धाम' पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।
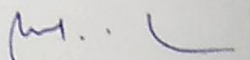
बाबा विश्वनाथ की नगरी के रूप में सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध काशी, सदैव से धर्म और अध्यात्म का केन्द्र रही है। काशी के कण-कण में संस्कार और संस्कृति है। प्राचीनकाल से यह नगरी भारतीय संस्कृति एवं परम्परा को अपने अस्तित्व में संजोए हुए है।

हम सभी का यह सौभाग्य है कि मा0 प्रधानमंत्री जी संसद में वाराणसी का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके विजन के अनुरूप केन्द्र सरकार और राज्य सरकार काशी को ऐसे अत्याधुनिक नगर के रूप में विकसित कर रही हैं, जिसकी आत्मा पुरातन, किन्तु काया नवीनतम होगी। आज काशी अपनी मौलिक पहचान बनाए रखते हुए सर्वांगीण एवं भविष्योन्मुखी विकास की ओर तेजी से अग्रसर है।

श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गौरव की पुनर्स्थापना के उद्देश्य से मा0 प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में श्री काशी विश्वनाथ धाम निर्मित कराया गया है। इसका निर्माण हो जाने से भक्तगण सुगमतापूर्वक बाबा विश्वनाथ की पूजा-अर्चना करने के साथ ही प्राचीन काल की भांति बाबा के धाम से ही माँ गंगा के दर्शन कर सकेंगे।

मुझे आशा है कि इस अवसर पर प्रकाशित की जा रही पुस्तक में काशी की गौरवशाली विरासत तथा आधुनिक विकास से सम्बन्धित संग्रहणीय सामग्री का समावेश किया जाएगा।

पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)
मुख्यमंत्री, उ0प्र0

दिनांक : 09 दिसंबर, 2021

श्री कालभैरवाष्टकम्

ॐ देव्यराज सेव्यमानं पावनांघ्रिपंकजम्
कालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगंबरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥1॥

भानुकोटिभाष्करं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमंबुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥2॥

शूलटंकपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥3॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्मनोज्ञ हेमकिंकिणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥4॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्ण शेषपाशशोभितांग मण्डलं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ।।5।।

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षदं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ।।6।।

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालकन्धरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ।।7।।

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्य पापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ।।8।।

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम ।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं
ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं ध्रुवम ।।9।।

काशी माहात्म्य

"काश्यते प्रकाश्यते या सा काशी"

अलौकिक ज्ञान से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को आलोकित करने वाली काशी, साक्षात् भगवान् शिव के विग्रह स्वरूप में विराजमान संसार की प्राचीनतम नगरी काशी, विश्वकर्मा की सर्वश्रेष्ठ रचना काशी, जिसे भगवान शिव ने स्वयं आनन्दकानन तदनन्तर अविमुक्त और अविनाशी कहा।

पतित पावनी मां गंगा के तट पर वरुणा और असि नदियों के मध्य स्थित होने के कारण इसे सारा विश्व वाराणसी के नाम से जानता है। इसको पूर्णतीर्थ, तपःस्थली, काशिका, अविमुक्त, आनन्दवन, अपुनर्भवभूमि, रूद्रवास तथा महाश्मशान आदि नामों से भी जाना जाता है।

विश्व के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में काशी का उल्लेख मिलता है। पुराणों के अनुसार यह आद्य वैष्णव स्थल है। पहले यह भगवान विष्णु (माधव) की पुरी थी, जहाँ श्रीहरि के आनंदाश्रु गिरने से बिंदु सरोवर बन गया और प्रभु यहाँ बिंदुमाधव के नाम से प्रतिष्ठित हुए।

मत्स्य पुराण में वर्णन आता है कि काशी ब्रह्मा जी का परम स्थान, ब्रह्मा द्वारा अध्यासित, सदासेवित और रक्षित है।

स्कन्द पुराण में काशी को भूमि का खण्ड न कहकर ब्रह्म रसायन कहा गया है। साक्षात् भगवान विश्वेश्वर ने काशीरूपी ब्रह्मरसायन को त्रिलोक में सबसे प्रिय परम सौख्य की भूमि कहा है। स्कन्द पुराण में ही वर्णन आता है कि यह काशीपुरी त्रैलोक्य से न्यारी एवं सनातन सत्य स्वरूपा है। काशी भगवान शंकर के त्रिशूल पर विराजित है। ऋग्वेद, अथर्ववेद, शतपथ ब्राह्मण, गोपथ ब्राह्मण में "काशि" शब्द तथा बृहदारण्यकोपनिषद्, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, अष्टाध्यायी सहित सभी ग्रन्थों में काशी की महत्ता से सम्बन्धित उद्धरण मिलते हैं।

महर्षि व्यास ने काशी को त्रैलोक्य की नाभि बताते हुए कहा है कि सम्पूर्ण धरित्री की नाभिभूता शुभोदया, इस काशी का प्रलयकाल में भी लोप नहीं होता है।

लिंग पुराण के अनुसार काशी का वैशिष्ट्य प्रतिपादित करते हुए साक्षात् महादेव का कथन है कि वाराणसी मेरा गूढ़तम क्षेत्र है और सर्वदा प्राणियों के मोक्ष का कारण है।

काशी सदैव अध्यात्म, संस्कृति और शिक्षा का केंद्र रही है। भगवान बुद्ध को ज्ञान तो बोध गया में मिला, पर धर्म चक्र प्रवर्तन के लिए वह ज्ञान और अध्यात्म के केन्द्र काशी

के पास ऋषि पत्तन (सारनाथ) आते हैं। वेदांत के सबसे बड़े प्रवक्ता आदिगुरु शंकराचार्य केरल प्रदेश के कालड़ी नामक स्थान से काशी आते हैं। महान संत नानक और मध्यकाल में राजकुमार दाराशिकोह काशी आते हैं। काशी में कबीर के स्वर में निर्गुण की गूँज होती है, तो राम कथा के माध्यम से तुलसी सगुण और निर्गुण के बीच समन्वय स्थापित करने का काम करते हैं। जिसे काशी ने स्वीकार किया, उसे संसार ने स्वीकार किया। भारत रत्न पंडित महामना मदन मोहन मालवीय ने भी प्रयाग से आकर वाराणसी में ही काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की। विश्व में ब्रह्मोदय (संवाद) का सबसे प्रतिष्ठित केंद्र रहा है काशी। यहाँ संस्कृत पाठशालाओं में शास्त्रार्थ की प्राचीन परम्परा आज भी जीवंत है।

काशी हिन्दू सनातन परम्परा के साथ-साथ अन्य हिन्दू पांथिक परम्पराओं, मान्यताओं को भी अपने आप में आत्मसात किये हुए है।

काशी यूं ही सम्पूर्ण नगरी नहीं है। भगवान शिव की नगरी काशी "सर्वधर्म समभाव" का जीवंत उदाहरण है तो इसलिए कि यह सभी धर्मावलंबियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रही है।

काशी और कबीर

काशी की इस पावन धरा ने समय-समय पर ऐसे अनेक संत महापुरुषों को उत्पन्न किया है, जिन्होंने मानव जीवन को निष्कंटक बनाते हुए जीवन पथ को सरल, संयमित एवं उच्च आदर्शों से युक्त बनाया है। ऐसे संतों में कबीर दास का वर्णन अग्रिम पंक्तियों में आता है।

काशी और तुलसीदास

युग प्रवर्तक तुलसीदासजी का काशी से अत्यधिक लगाव रहा है। अयोध्या एवं चित्रकूट के अतिरिक्त जीवन के मूल्यवान क्षण उन्होंने काशी में ही व्यतीत किये थे तथा उनके द्वारा श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के शिवलिंग को साक्षी मानकर अपने रामचरित मानस ग्रंथ को काशी विद्वत् मण्डली के समक्ष प्रस्तुत किये जाने का प्रसंग मिलता है।

बाह्य आक्रान्ताओं और मुगलों के शासनकाल में जब सभी को धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया जाने लगा, तब निर्भीकतापूर्वक रामचरित मानस एवं रामलीला मंचन के माध्यम से इसी काशी से तुलसीदास ने "राजा रामचन्द्र जी की जय हो" का उद्घोष गांव-गांव तक पहुँचाया।

काशी और संत शिरोमणि रविदास

सन्त शिरोमणि रविदास जी को पंजाब में रविदास तथा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और

राजस्थान में रैदास के नाम से जाना जाता है। सन 1376 के माघ मास की पूर्णिमा तिथि में इनका जन्म इसी काशी के गोवर्धनपुर गांव में हुआ था। अतः प्रत्येक वर्ष की माघी पूर्णिमा को इनका जन्म उत्सव पूरे देश में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।

काशी में गूंजते हैं वैदिक मंत्र

काशी में बाबा विश्वनाथ का दिव्य धाम, माता अन्नपूर्णा का स्थल, कालभैरव, बड़ा गणेश, नवगौरी, नवदुर्गा, छप्पन विनायक, द्वादश आदित्य, अष्ट भैरव, चौंसठ योगिनियों के पूजन मंत्रों सहित पक्के महाल की गलियों में आज भी वैदिक मंत्रों की गूँज सुनाई देती है। यहाँ संस्कृत पाठशालाओं में शास्त्रार्थ की परम्परा अब भी जीवंत है। इसकी उत्पत्ति के सन्दर्भ में स्कन्द पुराण के काशी खण्ड में वर्णन है कि स्कन्द माता पार्वती के साथ इस पृथ्वीलोक में विचरण करते हुए स्वयं भगवान शिव ने अपने साक्षात् विग्रह द्वारा अपनी इच्छानुसार शक्ति स्वरूपा प्रकृति एवं परमेश्वर रूप पुरुष (स्वयं) के परमानन्द स्वरूप से परमानन्द देने वाली एक ऐसी नगरी की रचना की, जहाँ माता पार्वती के साथ स्वयं भगवान् शिव प्रलयान्त तक निवास कर सकें। स्कन्द पुराण के अनुसार, काशी नगरी का स्वरूप सतयुग में त्रिशूल आकार का, त्रेता में चक्र के आकार का, द्वापर में रथ के आकार का तथा इस कलियुग में शंख के आकार का होता है। इसीलिए काशी को भगवान् शिव के त्रिशूल पर स्थित बताया जाता है, क्योंकि इन आकृतियों का प्रथम रूप त्रिशूल ही है।

अयोध्या-मथुरा माया काशी कांचीत्ववन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिकाः।।

अर्थात अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी (वाराणसी), कांची, अवन्तिका (उज्जयिनी) और द्वारिका धाम सात मोक्षपुरियाँ हैं, परंतु अन्त में काशी वास मोक्ष प्रदायक माना गया है।

अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तिकराणि च।
काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः
।। स्कन्द पुराण 4/6/71

परन्तु काशी ही एक पुरी है जो साक्षात् मोक्ष देती है, जैसा कि वर्णित है कि काशी में प्राण त्यागने वाले का पुनर्जन्म नहीं होता। मुक्तिदायिनी काशी की यात्रा, यहां निवास, मरण तथा दाह-संस्कार का सौभाग्य पूर्वजन्मों के पुण्यों तथा बाबा विश्वनाथ की कृपा से ही प्राप्त होता है। काशी का सान्निध्यमात्र ही पापों को विनष्ट कर देता है।

श्री शिवपञ्चाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्मांगरागाय महेश्वराय
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै "न" काराय नमः शिवाय

मंदाकिनी सलिलचन्दन चर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथ महेश्वराय
मंदारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय
तस्मै "म" काराय नमः शिवाय

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै "शि" काराय नमः शिवाय

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय
चन्द्रार्क वैश्वानरलोचनाय
तस्मै "व" काराय नमः शिवाय

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै "य" काराय नमः शिवाय

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते

श्री काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शिवजी बारह स्थानों पर ज्योतिर्लिंग के रूप में उपस्थित हैं। सौराष्ट्र प्रदेश (काठियावाड़) में श्री सोमनाथ, श्री शैलम् पर श्री मल्लिकार्जुन, उज्जयिनी (उज्जैन) में श्री महाकाल, उज्जैन के निकट खंडवा जिले में ऊँकारेश्वर अथवा ममलेश्वर, परली में वैद्यनाथ, डाकिनी नामक स्थान में श्री भीमाशंकर, सेतुबंध पर श्री रामेश्वर, दारुकावन में श्री नागेश्वर, वाराणसी (काशी) में श्री विश्वनाथ, गौतमी (गोदावरी) के तट पर श्री त्रयम्बकेश्वर, हिमालय पर केदारखंड में श्री केदारनाथ और शिवालय में श्री घृष्णेश्वर। मान्यता है कि जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल और संध्या के समय इन बारह ज्योतिर्लिंगों का स्मरण करता है, उसके सात जन्मों का किया हुआ पाप इन लिंगों के स्मरण मात्र से नष्ट जाता है।

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्,
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥1॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्,
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥2॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमीतटे,
हिमालये तु केदारं घृष्णेशं च शिवालये ॥3॥
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः,
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥4॥

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग काशी में स्थित है। काशी नगरी के उत्तर की तरफ ओंकारखंड, दक्षिण में केदारखंड और बीच में विश्वेश्वरखंड है। प्रसिद्ध विश्वनाथ-ज्योतिर्लिंग इसी खंड में स्थित है। पुराणों में इस ज्योतिर्लिंग के संबंध में यह कथा दी गयी है कि भगवान शंकर पार्वती जी से विवाह करके कैलाश पर्वत पर रह रहे थे, लेकिन वहां पिता के घर में ही विवाहित जीवन बिताना पार्वती जी को अच्छा न लगता था। एक दिन उन्होंने भगवान शिव से कहा कि आप मुझे अपने घर ले चलिए, यहाँ रहना मुझे अच्छा नहीं लगता। भगवान शिव ने उनकी यह बात स्वीकार कर ली। तब भगवान शिव माता पार्वती जी को साथ लेकर अपनी पवित्र नगरी काशी आ गये। यहां आकर वे विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गये।

काशी की प्राचीनता के साथ ही भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग स्वरूप श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर की भी प्रचीनता सिद्ध होती है।

वाराणसी शहर में स्थित भगवान शिव का यह मंदिर हिन्दुओं के प्राचीन मंदिरों में से एक है, जो कि गंगा नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। इस मन्दिर में प्राचीन काल से भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग स्वरूप की पूजा होती है।

श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के विध्वंस के प्रयास

इतिहासकारों के अनुसार श्री काशी विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार 11वीं सदी में राजा हरिश्चन्द्र ने करवाया था। पर, वर्ष 1194 में मुहम्मद गोरी ने इसे तुड़वा दिया था। कुतुबुद्दीन ऐबक और शहाबुद्दीन गोरी ने 1194 ईस्वी में वाराणसी को फतह किया और वाराणसी की हुकूमत उन्होंने अपने एक सूबेदार सैय्यद जमालुद्दीन के सुपुर्द कर दी। उसने बनारस से मूर्तिपूजा हटाने का पूरा प्रयत्न करते हुए श्री काशी विश्वनाथ मंदिर का विध्वंस किया। कालान्तर में सनातन समाज द्वारा इस मन्दिर को पुनः बनाया गया।

1447 में महमूद शाह द्वारा विध्वंस

मन्दिर पुनः बनने के बाद वर्ष 1447 में इसे जौनपुर के सुल्तान महमूद शाह ने तुड़वा दिया। महमूद शाह शर्क (1436- 1458 ईस्वी) के समय में बनारस के मन्दिरों की तोड़-फोड़ फिर से आरम्भ हो गयी थी। जौनपुर की लाल दरवाजा मस्जिद 1447 ईस्वी में बनी। इसी समय श्री काशी विश्वनाथ का यह मन्दिर भी तोड़ा गया।

टेडरमल की सहायता से श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण

अकबर के शासनकाल में उनके मंत्री राजा टोडरमल की मदद से 1585 के आस-पास नारायण भट्ट ने काशी विश्वनाथ मंदिर को फिर बनवाया। टोडरमल के पुत्र गोवर्धन, गोवर्धनधारी अथवा धरू को यहां के धार्मिक कार्यों का श्रेय जाता है। बनारस में टोडरमल के नाम से जो मन्दिर या बावलियाँ बनीं, उन्हें गोवर्धन ने ही बनवाया, ऐसा इतिहासकारों का मत है।

शाहजहाँ द्वारा विध्वंस का प्रयास

सन् 1632 में शाहजहाँ ने आदेश पारित कर मंदिर तोड़ने के लिए सेना भेज दी, लेकिन

हिन्दुओं के प्रबल प्रतिरोध के कारण विश्वनाथ मंदिर के केंद्रीय मंदिर को तो उसकी सेनाएं तोड़ नहीं सकी, लेकिन काशी के 63 अन्य मंदिर जरूर तोड़ दिये गये।

औरंगजेब द्वारा विध्वंस

18 अप्रैल, 1669 को औरंगजेब ने एक फरमान जारी कर काशी विश्वनाथ मंदिर को ध्वस्त करने का आदेश दिया। (यह फरमान एशियाटिक लाइब्रेरी, कोलकाता में आज भी सुरक्षित है।) उस समय के लेखक साकी मुस्तइद खां द्वारा लिखित पुस्तक में इस ध्वंस का वर्णन है। औरंगजेब ने ताकीद की थी कि काशी विश्वनाथ मन्दिर को सिर्फ तोड़ा ही न जाये, बल्कि यह सुनिश्चित किया जाये कि फिर वहां मन्दिर का निर्माण न हो सके। इसलिए औरंगजेब के आदेश पर यहां का मंदिर तोड़कर गर्भगृह पर या गर्भगृह को ही तोड़कर एक ज्ञानवापी मस्जिद बनायी गयी। 2 सितंबर 1669 को औरंगजेब को मंदिर को तोड़ने का कार्य पूरा होने की सूचना दी गयी थी।

अहिल्याबाई होलकर द्वारा मन्दिर का पुनर्निर्माण

सन् 1752 से लेकर सन् 1780 के बीच मराठा सरदार दत्ताजी सिंधिया व मल्हारराव होलकर ने मंदिर मुक्ति के प्रयास किये। 7 अगस्त 1770 ई. में महादजी सिंधिया ने दिल्ली के बादशाह शाह आलम से मंदिर तोड़ने की क्षतिपूर्ति वसूल करने का आदेश जारी करा लिया, परंतु तब तक काशी पर ईस्ट इंडिया कंपनी का राज हो गया था, इसलिए मंदिर का नवीनीकरण रुक गया। 1777-80 में इंदौर की महारानी अहिल्याबाई द्वारा इस मंदिर का पुनः निर्माण करवाया गया था। कालान्तर में पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने स्वर्ण पत्रों से मंदिर के शिखरों को सुसज्जित करवाया। ग्वालियर की महारानी बैजाबाई ने मंडप बनवाया और महाराजा नेपाल ने वहाँ विशाल नंदी प्रतिमा स्थापित करवायी।

इतिहास में 11वीं से 17वीं सदी के कालखंड में मंदिरों का जिक्र और उनके विध्वंस की बातें सामने आती हैं। मोहम्मद तुगलक (1325) के समकालीन लेखक जिनप्रभ सूरि ने किताब "विविध कल्प तीर्थ" में लिखा है कि बाबा विश्वनाथ मन्दिर के परिक्षेत्र को देव क्षेत्र कहा जाता था। इतिहासकार फ्यूरर ने भी लिखा है कि फिरोजशाह तुगलक के समय कुछ मंदिर मस्जिद में तब्दील हुए थे। 1460 में वाचस्पति ने अपनी पुस्तक "तीर्थ चिंतामणि" में वर्णन किया है कि अविमुक्तेश्वर और विश्वेश्वर एक ही लिंग है।

इस प्रकार इतिहास के अनुसार श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के निर्माण और विध्वंस की घटनाएं 11वीं सदी से लेकर 17वीं सदी तक चलती रहीं। यद्यपि 30 दिसंबर 1810 को बनारस के तत्कालीन जिला दंडाधिकारी मि. वाटसन ने 'वाइस प्रेसीडेंट इन काउंसिल' को एक पत्र लिखकर ज्ञानवापी परिसर श्री काशी विश्वनाथ मन्दिर को हमेशा के लिए हिंदुओं को सौंपने के लिए कहा था, लेकिन यह कभी संभव ही नहीं हो पाया।

मंदिर में मुख्य देवता का लिंग विग्रह 60 सेंटीमीटर (24 इंच) लंबा और 90 सेंटीमीटर (35 इंच) परिधि में एक चांदी की वेदी में रखा गया है। मुख्य मंदिर चतुर्भुज है और अन्य देवताओं के मंदिरों से घिरा हुआ है। परिसर में काल भैरव, कार्तिकेय, अविमुक्तेश्वर, विष्णु, गणेश, शनि, शिव और पार्वती के छोटे-छोटे मंदिर हैं। मंदिर में एक छोटा कुआँ है, जिसे ज्ञानवापी कूप कहा जाता है। ज्ञानवापी कूप मुख्य मंदिर के उत्तर में स्थित है। कहा जाता है कि ज्योतिर्लिंग को आक्रमणकारियों से बचाने के लिए मंदिर के मुख्य पुजारी ने शिवलिंग के साथ कुएं में छलांग लगा दी थी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विज़न के साथ संवरती काशी

देश के युगदृष्टा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी से नाता बहुत पुराना है। जब वह राजनीति में भी नहीं थे, तब से उन्हें बाबा विश्वनाथ, मां अन्नपूर्णा, मां गंगा की इस पुण्य नगरी में कई बार आने और यहाँ की सांस्कृतिक-आध्यात्मिक दिव्यता से जुड़ने का अवसर मिलता रहा।

काशी में बिताये हर पल को मन में संजोने वाले नरेन्द्र मोदी जी के मन में काशी और काशी विश्वनाथ धाम के लिए कुछ करने की इच्छा समय के साथ लगातार प्रबल होती गयी।

संभवत: इसीलिए जब वर्ष 2014 में वह काशी में अपना नामांकन पत्र दाखिल करने आये तो काशी की धरती से उनका आह्वान था- "न मैं यहाँ आया हूँ, न यहाँ लाया गया हूँ मुझे माँ गंगा ने बुलाया है।" काशी की सेवा का भाव लिये उनका यह संकल्प अवस्थापना विकास व सौन्दर्यीकरण के संबंध में काशी की युग परिवर्तक प्रगति का ही पूर्व उद्घोष था।

काशी भी नरेन्द्र मोदी जी को हमेशा भरपूर प्यार और विशेष स्नेह देती रही है। भोले बाबा की काशी ने उन्हें पहली बार सांसद बनाया, तो जन-जन के विश्वास ने विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का उन्हें प्रधानमंत्री बनाया।

आज काशी अपने जन प्रतिनिधि और देश के प्रधानमंत्री मोदी जी के विजन के अनुरूप हजारों करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट्स के माध्यम से अपनी मौलिक पहचान बनाये रखते हुए सर्वांगीण और भविष्योन्मुखी विकास की ओर तेजी से अग्रसर है।

काशी के इंफ्रास्ट्रक्चर पर मोदी जी का खास फोकस है। सड़क, रेल और हवाई कनेक्टिविटी में आये अभूतपूर्व सुधार से यहां का जीवन तो आसान हो ही रहा है, कारोबार करने में भी अधिक सुविधा हो रही है।

चाहे बिजली के तारों का जंजाल दूर करने के लिए पुरानी काशी में अंडर ग्राउंड वायरिंग का सिस्टम हो, पेयजल और सीवर की समस्याओं का निदान हो, पर्यटन को बढ़ाने के लिए विकास कार्य हो, सभी में अभूतपूर्व कार्य हुए हैं।

कृषि से जुड़े इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर भी काशी में निरंतर काम चल रहा है। आज काशी नगरी एग्रो एक्सपोर्ट हब के रूप में स्थापित हो रही है और यहां का लंगड़ा तथा दशहरी आम आज यूरोप से लेकर खाड़ी देशों में अपनी मिठास भर रहा है।

काशी नगरी आज पूर्वांचल का बहुत बड़ा मेडिकल हब बन रही है। जिन बीमारियों के इलाज के लिए कभी दिल्ली और मुंबई जाना पड़ता था, उनका इलाज आज काशी में भी उपलब्ध है।

जन-जन की आकांक्षा के अनुरूप काशी की, चौरासी घाटों की, मां गंगा की स्वच्छता और सुंदरता मोदी जी की प्राथमिकताओं में है। बेहतर सुविधाएं, बेहतर कनेक्टिविटी, सुंदर होती गलियां और घाट, ये चिर-पुरातन काशी की नूतन अभिव्यक्ति हैं।

काशी के पारंपरिक उद्योग को मजबूती देने से लेकर नये निवेश बढ़ाने, रोजगार से लेकर स्वरोजगार और कारोबार के अवसर उपलब्ध कराने पर चौतरफा काम हो रहा है। "रुद्राक्ष" के रूप में काशीवासियों को मिला इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर काशी की कला, साहित्य और संगीत की समृद्ध विरासत को समर्पित है।

काशी के पुरातन वैभव की समृद्धि ज्ञान की गंगा से भी जुड़ी हुई है। मोदी जी के विजन के तहत काशी का आधुनिक ज्ञान और विज्ञान के केंद्र के रूप में भी निरंतर विकास जारी है। मॉडल स्कूल, आई.टी.आई, पॉलिटेक्निक जैसे अनेक संस्थान और नयी सुविधाओं से काशी लगातार ज्ञान केंद्र के रूप में सुप्रतिष्ठित हो रही है। सेन्ट्रल इन्स्टीट्यूट ऑफ प्लास्टिक इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नालॉजी (सीपेट) का काशी केंद्र, पूर्वांचल के औद्योगिक विकास को ऊर्जा देने वाला है जिससे आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए कुशल युवाओं के प्रशिक्षण में काशी की भूमिका और मजबूत होने वाली है।

शाश्वत काशी की सांस्कृतिक-आध्यात्मिक अभिवृद्धि

देश की सांस्कृतिक धरोहरों और आस्था के प्रतीकों को भविष्य की पीढ़ियों हेतु सहेजने के लिए कृत संकल्प नरेन्द्र मोदी जी इस दिशा में लगातार प्रयास कर रहे हैं। उनके अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि 100 साल से भी पहले माता अन्नपूर्णा की जो मूर्ति काशी से चोरी हो गयी थी, वह अब फिर अपने घर काशी आ गयी है। काशी के लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है। हमारे देवी-देवताओं की ये प्राचीन मूर्तियाँ, हमारी आस्था के प्रतीक के साथ ही हमारी अमूल्य विरासत भी हैं। माता अन्नपूर्णा के काशी आने से लोक आस्था का गौरव और अधिक प्रदीप्त हुआ है ।

नरेन्द्र मोदी जी कहते हैं कि काशी के विकास के लिए जो कुछ भी हो रहा है, वह सब कुछ महादेव के आशीर्वाद और बनारस की जनता के प्रयास से ही जारी है। कोरोना महामारी के दौरान भी विकास की अनवरत यात्रा ने काशी के उस मिजाज को साबित किया है कि बाबा की ये नगरी कभी थमती नहीं, कभी थकती नहीं, कभी रुकती नहीं! विकास की नयी ऊंचाइयों ने काशी के इस स्वभाव को एक बार फिर सिद्ध कर दिया है।

श्री काशी विश्वनाथ धाम का नव निर्माण

काशी के जन प्रतिनिधि और काशी के अपने नरेन्द्र मोदी जी ने यहाँ विकास की जो अविरल धारा बहाई है, उसका उत्कर्ष बिंदु है बाबा के दरबार तक भव्य और दिव्य विश्वनाथ कॉरिडोर बनाने का उनका निर्णय।

मोदी जी का हमेशा से यह स्वप्न रहा कि बाबा विश्वनाथ के आशीर्वाद से काशी के लिए ऐसा कुछ कर सकें कि श्रद्धालु जब बाबा के दर्शन को आयें तो उनका मन प्रफुल्लित हो जाये। श्री काशी विश्वनाथ धाम के नव निर्माण के पीछे मोदी जी का ऐसा ही विजन है।

पुराने समय में श्रद्धालु माँ गंगा से जल भरकर बाबा को विश्वनाथ धाम में गंगाजल चढ़ाते थे, पर समय के साथ अनियंत्रित व बेतरतीब निर्माण के कारण यह संभव नहीं रहा। लोक आस्था की इस अमूल्य परंपरा और काशी के गौरव को पुनर्जीवित करने के लिए जिस दृढ़ संकल्प और निर्णायक नेतृत्व की जरूरत थी, वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी जैसे अप्रतिम व्यक्तित्व से ही सम्भव था।

श्री विश्वनाथ धाम कॉरिडोर की योजना का जब प्रारूप बना, तो घनी आबादी और इंच-दर-इंच बसावट के कारण इसे जमीनी तौर पर कार्यान्वित करना असम्भव सा प्रतीत हुआ, लेकिन स्पष्ट इच्छाशक्ति वाले मोदी जी ने सारी बाधाओं को हल किया। उन्होंने संवाद के साथ सबको साथ लेकर चलने की बात की। इसका शानदार परिणाम भी निकला।

प्रोजेक्ट के लिए करीब 300 सम्पत्तियों और वहां रहने वालों के पुनर्स्थापन के दौरान एक भी कानूनी अड़चन नहीं आयी, कोई मुकदमेबाजी नहीं हुई। प्लानिंग से लेकर आर्किटेक्चर और डिजाइन की बारीकियों तक में श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लगातार अपने इनपुट्स दिये, दिव्यांगजन की सुगम्यता सुनिश्चित करने का सुझाव दिया।

प्रोजेक्ट के निर्माण कार्य के दौरान मोदी जी पूरी तरह इससे जुड़े रहे। उन्होंने कार्य की प्रगति का स्वयं निरीक्षण किया। अपने कार्यालय में प्रोजेक्ट का 3डी मॉडल रखा और कोरोना के समय भी ऑनलाइन निरीक्षण और निर्देशन करते रहे।

महादेव के आशीर्वाद से श्री काशी विश्वनाथ धाम के सांस्कृतिक-आध्यात्मिक गौरव की पुनर्स्थापना का कार्य रिकॉर्ड समय और गति से संभव हुआ है, जो प्रधानमंत्री जी के यशस्वी नेतृत्व और 'सबके प्रयास' का अप्रतिम प्रतिबिम्ब है।

सनातन चेतना का यह मर्म-स्थल सदियों से दुश्मनों के निशाने पर रहा। यह कई बार ध्वस्त किया गया, कई बार अपने अस्तित्व के बिना जिया, लेकिन यहाँ की अटूट आस्था ने इसे हर बार पुनर्जीवित किया, पुनर्चेतना दी और यह कर्म सदियों से चलता आ रहा है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में श्री काशी विश्वनाथ धाम का यह कार्य सदियों से प्रगाढ़ होती लोक आस्था और अहिल्याबाई होलकर से लेकर महात्मा गाँधी जैसे महान व्यक्तित्वों के स्वप्नों की भी साकार अभिव्यक्ति है।

प्रोजेक्ट के कार्य के दौरान 40 से ज्यादा ऐतिहासिक पुरातत्वीय मंदिर मिले, जो करोड़ों-करोड़ों देशवासियों के लिए अमूल्य धरोहर हैं। यह विकास कार्य इस बात का भी उदाहरण है कि पुरातात्विक चीजों को बचाये रखते हुए, उसकी आत्मा को वैसे ही बरकरार

रखते हुए, आधुनिकता कैसे लायी जा सकती है, व्यवस्थाएं कैसे आधुनिक बनायी जा सकती हैं। बाबा विश्वनाथ धाम को माँ गंगा से फिर से जोड़ने वाला यह विकास कार्य पूरे विश्व में काशी को एक नयी पहचान देने वाला है और यह धाम अपने आप में समग्र काशी की नवचेतना का, सामाजिक चेतना का केंद्र बनने वाला है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने काशी विश्वनाथ धाम के कायाकल्प का जो बीड़ा उठाया, उसे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के सघन पर्यवेक्षण व काशी की श्रद्धालु व महान जनता के अपार समर्थन से पूर्ण किया जा सका। लगभग 50,000 वर्ग मीटर में फैले श्री काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर को मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के चिंतन के अनुरूप स्वच्छ, उत्कृष्ट एवं आध्यात्मिक ऊर्जा के केंद्र के रूप में प्रतिष्ठापित किया गया है।

श्री काशी विश्वनाथ मंदिर परिसर का कायाकल्प तथा मां गंगा के पावन जल तक बिना अवरोध भव्य सीधा मार्ग प्रशस्त किया जाना स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। इससे पूर्व यह कार्य असम्भव सा माना जा रहा था। इस महान पुनीत कार्य के सन्दर्भ में आचार्य भर्तृहरि द्वारा लिखित नीतिशतक का एक श्लोक पंक्तिशः प्रासंगिक है –

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।

अर्थात् उत्तम श्रेणी के लोग विघ्नों के बार-बार आने पर भी आरम्भ किये गये कार्य को पूर्ण किये बिना विश्राम नहीं करते।

श्री काशी विश्वनाथ धाम परिकल्पना को साकार करने में विभिन्न बाधाएँ भी थीं जैसे- लगभग 400 परिसम्पत्तियां विकसित करना तथा इनमें निवास करने वाले 1400 व्यक्तियों व दुकानदारों को पुनर्वासित करना।

धार्मिक व सांस्कृतिक प्रतीकों को अक्षुण्ण बनाये रखते हुए आधुनिक सुविधायुक्त भवनों का निर्माण तथा प्राचीन मंदिरों व सांस्कृतिक स्थलों का जीर्णोद्धार करना।

धाम की परिकल्पना को साकार करने के लिए धार्मिक व्यक्तियों से परिचर्चा, निवासियों से संवाद बनाकर परियोजना की मूलभूत विशेषताओं को समझाते हुए तय समय सीमा के अन्तर्गत पूरा किया गया। इसके लिए निश्चित रूप से काशीवासी भी धन्यवाद के पात्र है, जिन्होंने इन विषम परिस्थितियों को सुगम बनाने में अद्‌भुत सहयोग दिया।

साथ ही साथ काशी के पूज्य संतों, श्री काशी विद्वत्परिषद् सहित विद्ववत्जनों, गणमान्य नागरिकों का भी सहयोग एवं समर्थन अभिभूत करने वाला है।

श्री काशी विश्वनाथ धाम का नव भव्य स्वरूप

श्री काशी विश्वनाथ धाम का मुख्य आकर्षण मंदिर परिसर में **निर्मित भवन तथा आध्यात्मिक व धार्मिक महत्व की संरचनाएं हैं।** इसमें भवन निर्माण पर रु 386.70 करोड़ व्यय हुए हैं। मन्दिर परिसर का विस्तार करने के लिए रु 489.05 करोड़ भवन क्रय में व्यय किये गये। कॉरिडोर निर्माण / विस्तार के दौरान आस-पास के घरों के अन्दर स्थित 40 मन्दिर विग्रह सहित प्राप्त हुए। इन सभी 40 मन्दिरों का पुरातन भव्यता के साथ जीर्णोद्धार करके एक मणिमाला की तरह पुनर्स्थापित किया गया है। निर्मित नवीन परिसर की विशेषताएं निम्नवत हैं-

मंदिर परिसर

श्री काशी विश्वनाथ धाम का मुख्य आकर्षण मंदिर परिसर है जिसके प्रदक्षिणा पथ में चार भव्य द्वारों का निर्माण किया गया है। श्री काशी विश्वनाथ धाम में चुनार का लाल बलुआ पत्थर, मकराना संगमरमर का प्रयोग किया गया है। वास्तुकला के दृष्टिगत काशी की वास्तुकला तथा आध्यात्मिक भाव को समाहित करते हुए परिसर को मेहराब, बेलबूटे, स्तम्भों की बनावट, प्रदक्षिणा मार्ग तथा प्रस्तर की जालियों से सुसज्जित किया गया है। मुख्य परिसर में भक्तों को भव्य एवं दिव्य अनुभूति होगी।

यात्री सुविधा केन्द्र

श्री काशी विश्वनाथ धाम के अन्तर्गत निर्मित यात्री सुविधा केन्द्र में श्रद्धालुओं के लिए सिक्योरिटी चेक एवं लॉकर की सुविधा है।

शॉपिंग कॉम्प्लेक्स

शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के निर्माण से श्रद्धालुओं को आवश्यक पूजन सामग्री, दान की वस्तुएं और पूजा के उपकरण तथा अन्य उपयोगी सामान परिसर में ही उपलब्ध होंगे। इससे कारोबार एवं रोजगार में वृद्धि होगी।

वाराणसी गैलरी

इस भवन का क्षेत्रफल 375 वर्गमीटर है। उक्त भवन मल्टीपरपज हॉल और सिटी म्यूजियम के बीच करुणेश्वर महादेव मंदिर के पास स्थित है। उक्त भवन की आंतरिक

दीवारों पर चित्रों के माध्यम से आध्यात्मिक व धार्मिक आख्यानों का उल्लेख किया गया है।

सिटी म्यूजियम

इस भवन का क्षेत्रफल 1143 वर्गमीटर है, जो वाराणसी गैलरी व मुमुक्षु भवन के बीच में स्थित है। यह भवन जी+1 है। इस भवन में एक रिसेप्शन होगा, जो प्रदर्शनी स्थान को निर्देशित करेगा। इस भवन में बड़े कमरे व छोटे कमरे होंगे। यह भवन यात्रियों को प्राचीन वस्तुओं के बारे में जानकारी देने की सुविधा के दृष्टिगत बनाया गया है।

मुमुक्षु भवन

उपरोक्त भवन 1161 वर्गमीटर जी+2 में निर्मित है, जो मंदिर चौक के भव्य द्वार के ठीक बाद स्थित है। इसे आने वाले सभी वृद्ध यात्रियों व अस्वस्थ लोगों की देखभाल के लिए निर्मित किया गया है, तथा भवन में बेड व वार्डों की भी व्यवस्था की गयी है। इस भवन में सीढ़ी के अतिरिक्त वृद्ध व मरीजों की सुविधा हेतु लिफ्ट, रिसेप्शन, शौचालय की भी व्यवस्था की गयी है।

गेस्ट हाउस

यह भवन 1962 वर्गमीटर जी+2 में निर्मित है, जिसका निर्माण विशेष रूप से आने वाले यात्रियों/दर्शनार्थियों के ठहरने के लिए किया गया है।

वैदिक केन्द्र

यह भवन 986 वर्गमीटर जी+1 में निर्मित है। भवन यात्री सुविधा केन्द्र-3 के सामने स्थित है। भवन का निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी, सभा/समारोह आयोजित करने हेतु किया गया है।

मल्टीपरपज हॉल

यह भवन 976 वर्गमीटर जी+1 में निर्मित है। भवन मणिकर्णिका चौराहे के पास स्थित है। बहुउद्देशीय हॉल का निर्माण जनता के सेवा कार्यों के संचालन हेतु किया गया है। उक्त भवन में 200 से 300 लोग एक साथ समायोजित हो सकते हैं। साथ ही इसमें एस्केलेटर की भी व्यवस्था की गयी है।

टूरिस्ट फैसिलिटी सेन्टर

यह भवन 1061 वर्गमीटर जी+1 में निर्मित है। भवन के निर्माण का उद्देश्य मणिकर्णिका घाट पर एक हॉल बनाकर लकड़ियों को व्यवस्थित करना तथा ऊपरी मंजिल पर यात्रियों हेतु सुविधा केन्द्र बनाकर विभिन्न प्रकार की जानकारियों को उपलब्ध कराना है। यह भवन सम्पूर्ण घाट परिक्षेत्र में आने वाले यात्रियों के लिए न केवल सुविधा केन्द्र होगा, बल्कि घाटों के निकट होने के कारण व्यावसायिक रूप से भी महत्वपूर्ण होगा।

टॉयलेट ब्लॉक-1 व 2

यात्रियों की सुविधा के दृष्टिगत धाम में टॉयलेट ब्लॉक का निर्माण किया गया है।

जलपान गृह

यह भवन 1119 वर्गमीटर जी+1 में निर्मित है, जिसका निर्माण यात्रियों के लिए फूड कोर्ट और बैठने की सुविधा हेतु कराया गया है।

आध्यात्मिक बुक स्टोर

यह भवन 311 वर्गमीटर जी+1 में निर्मित है। यह भवन सिटी म्यूजियम व वाराणसी गैलरी के साथ एक प्लाजा में बनाया गया है, जिसमें आध्यात्मिक पुस्तक भण्डार / दुकान भी शामिल है।

काशी के महत्वपूर्ण मंदिर

बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी को देवताओं का वास स्थान भी माना जाता है। यहाँ पर बाबा विश्वनाथ के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण मंदिरों की भी स्थापना समय-समय पर की गयी, जिनका बनारस के जनमानस में अत्यंत पवित्र स्थान है। बाबा विश्वनाथ के दर्शनोपरान्त अन्य कई मंदिरों का दर्शन करना शुभ एवं अनिवार्य माना जाता है। श्री काशी विश्वनाथ धाम में माता अन्नपूर्णा का मंदिर भी स्थित है, जहाँ से माता अन्नपूर्णा का पवित्र विग्रह 108 वर्ष पहले चोरी होकर विदेश में कनाडा के एक संग्रहालय में चला गया था। इस पवित्र विग्रह को देश के यशस्वी प्रधानमंत्री के अद्भुत प्रयास से भारत वापस लाया जा सका और उसकी मन्दिर में उसकी पुनः स्थापना प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 15 नवम्बर, 2021 को की। इससे श्रद्धालुओं को भगवान विश्वेश्वर के दर्शन के बाद माता अन्नपूर्णा के दर्शन की पूर्णता प्राप्त होने लगी है।

इसके अतिरिक्त श्री काशी विश्वनाथ धाम में अन्य अत्यन्त पवित्र एवं महत्वपूर्ण मंदिर जैसे-कुम्भा महादेव मंदिर, बालमुकुन्देश्वर महादेव मंदिर, श्री नीलकंठ महादेव मंदिर, ब्रह्मेश्वर महादेव मंदिर, चन्द्रगुप्त मंदिर, गंगेश्वर महादेव, अमृतेश्वर महादेव, जय विनायक आदि मंदिर स्थित हैं।

इसके अतिरिक्त काशी में स्थित अन्य महत्वपूर्ण मंदिरों का विवरण व माहात्म्य निम्नवत है-

काल भैरव- यह मंदिर अष्टभैरवों के अन्तर्गत प्रमुख भैरव के रूप में पूजित है तथा काशी के कोतवाल के रूप में इनकी महत्ता जगत विदित है। काशी में जो भी व्यक्ति आता है, उसके लिए बाबा काल भैरव का दर्शन करना आवश्यक है। शास्त्रों में भैरव उपासना का बहुत उल्लेख प्राप्त है।

भारत माता मंदिर- यह मंदिर काशी में सिगरा पर काशी विद्यापीठ प्रांगण में स्थित है जहाँ भारत माता के पूर्ण स्वरूप का चित्रण किया गया है। यह स्थान दर्शनीय है।

विशालाक्षी मंदिर - यह मंदिर 51 शक्तिपीठों के अन्तर्गत आता है। यहाँ देवी सती की मणिकर्णिका गिरने पर इस शक्तिपीठ की स्थापना हुई। यह मंदिर मीरघाट पर

पतितपावनी माँ गंगा के समीप है। इसके दर्शन एवं पूजन से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

संकटमोचन मंदिर - इस मंदिर में भगवान हनुमान जी का साक्षात विग्रह स्वरूप प्रतिष्ठित है। यह मान्यता है कि इस मंदिर में दर्शन करने से भगवान श्री राम जी सहित हनुमान जी की कृपा जीवन में बनी रहती है।

दुर्गा माता मंदिर - यह मंदिर नौ देवियों में कूष्मांडा देवी के नाम से प्रसिद्ध है। नवरात्रि में चौथे दिन इस मंदिर में माता के दर्शन से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

श्री तुलसी मानस मंदिर- यह मंदिर काशी का प्रमुख मंदिर है। सम्पूर्ण रामचरित मानस को मंदिर की दीवारों पर उत्कीर्णित किया गया है, जो दर्शनीय एवं पूजनीय है।

महामृत्युंजय मंदिर- यह मंदिर भगवान महामृत्युंजय महादेव के नाम से प्रख्यात है। इस मंदिर के प्रांगण में एक कूप भी स्थित है, जो सर्व औषधि कूप के नाम से जाना जाता है। इस स्थान में जप-तप एवं अनुष्ठान करने का विधान है।

चिन्तामणि गणेश मंदिर - यह मंदिर भगवान गणेश का मंदिर है, जो सभी प्रकार की चिन्ताओं एवं मानसिक तथा शारीरिक बाधाओं को दूर करने के निमित्त पूजित होता है।

बटुक भैरव मंदिर - यह अष्टभैरव मंदिर के अन्तर्गत भगवान काल भैरव के बालस्वरूप का मंदिर है। इस मंदिर में विविध प्रकार की उपासनाएं होती हैं।

मार्कण्डेय महादेव मंदिर - यह मंदिर वाराणसी के कैथी ग्राम में स्थित है। इस मंदिर में विभिन्न प्रकार के जलाभिषेक तथा पुत्र प्राप्ति निमित्त पूजन विधान होते हैं।

बी.एच.यू. का नया विश्वनाथ मंदिर - वाराणसी में आने वाले पर्यटकों के लिए यह भव्य एवं विशाल मंदिर आकर्षण का केन्द्र है। भगवान शिव का यह मंदिर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थित है।

श्री रुद्राष्टकम्

श्री रुद्राष्टकम् स्तोत्र गोस्वामी तुलसीदास द्वारा भगवान शिव की स्तुति हेतु रचित है। इसका उल्लेख श्री रामचरितमानस के उत्तर कांड में आता है।

।। अथ रुद्राष्टकम् ।।

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं, विभुंव्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ।।1।।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं, गुणागार संसार पारं नतोऽहं ।।2।।

तुषाराद्रिसंकाश गौरं गंभीरं, मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनीचारुगंगा, लसद्भाल बालेन्दु कण्ठे भुजंगा ।।3।।

चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं ।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।।4।।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशं।
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ।।5।।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदासच्चिदानन्ददाता पुरारि ।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारि, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारि ।।6।।

न यावत् उमानाथपादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणां ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासं ।।7।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं।
जराजन्मदुःखौऽघतातप्यमानं, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ।।8।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये,
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।

।। श्री रुद्राष्टकम् सम्पूर्णम् ।।

महत्वपूर्ण आरतियाँ

मंगला आरती

भोग आरती

संध्या आरती
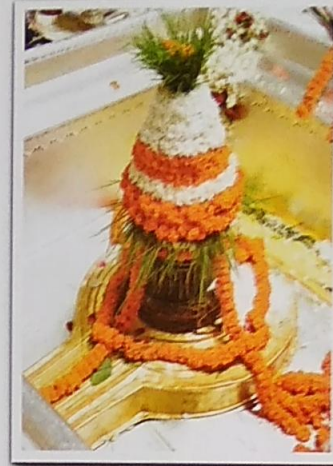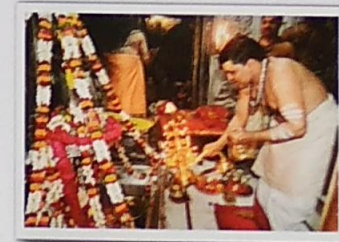
श्रृंगार आरती

शयन आरती

दिव्य काशी - भव्य काशी

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

मुद्रक : गॉस्पेल प्रेस, लखनऊ

दिव्य काशी - भव्य काशी
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
आज़ादी का अमृत महोत्सव
श्री काशी विश्वनाथ धाम
दिव्य काशी-भव्य काशी